**राष्ट्रमंडल संसदीय संघ भारत क्षेत्र के जोन-3 के 18वें सम्मेलन के उद्घाटन में माननीय लोक सभा अध्यक्ष महोदय का संबोधन**

**---**

*अरूणाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री, श्री पेमा खांडू जी;*

*अरूणाचल प्रदेश विधान सभा के माननीय अध्यक्ष, श्री पसांग दोरजी सोना जी;*

*माननीय पीठासीन अधिकारीगण;*

*विशिष्ट प्रतिनिधिगण; तथा*

*देवियो और सज्जनो:*

**---**

**1.** उगते सूरज की धरती, महान अरूणाचल प्रदेश की भूमि को नमन करता हूँ। राष्ट्रमंडल संसदीय संघ भारत क्षेत्र के ज़ोन-3 का यह 18वां सम्मेलन अरूणाचल प्रदेश में हो रहा है, यह बड़ा सुखद है। इस प्रदेश की विविधता, समृद्ध संस्कृति और मनोहारी सुंदरता देश-विदेश के लोगों का मन मोहती रही है। यहाँ का प्राकृतिक वातावरण और आध्यात्मिक संयोजन अद्भुत है।

**2.** यहां की भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विविधताएं, जनजातीय संस्कृति, यहां के लोगों की सरलता और कर्मठता देश को एक सकारात्मक संदेश देती है।

**3.** आज हम सब राष्ट्रमंडल संसदीय संघ भारत क्षेत्र, ज़ोन-3 के इस 18वें सम्मेलन में यहाँ उपस्थित हैं। हमारे सामने अपने संसदीय लोकतंत्र को समृद्ध बनाने के लिए चर्चा और विमर्श का यह सुअवसर है।

**4.** CPA की बैठकों में हमें अवसर मिलता है जब विभिन्न राज्यों के विधानमंडलों के प्रतिनिधिगण आपस में बैठते हैं तथा संसदीय परंपराओं को मजबूत करने के लिए, संसदीय प्रक्रियाओं को उन्नत बनाने के लिए आपस में चर्चा – संवाद करते हैं, नई तकनीक, नई विधाओं और नई सोच के साथ हम अपने विचारों और अनुभवों को साझा करते हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र हाल के समय में लोकतंत्र एवं लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए गहन विचार विनिमय का केन्द्र रहा है।

**5.** आपको स्मरण होगा कि अभी पिछले महीने CPA की कार्यकारिणी समिति की मध्य वर्षीय बैठक तथा 8वां CPA भारत क्षेत्र सम्मेलन का आयोजन उत्तर पूर्व क्षेत्र में ही गुवाहाटी में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ था, जिसमें देश विदेश की विधान मंडलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

6. स्वतंत्रता के उपरांत हमारे देश की 75 वर्षों की यात्रा में हमारा लोकतंत्र निरंतर सशक्त हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हमारे राष्ट्र निर्माताओं के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती एक ऐसी शासन प्रणाली स्थापित करना था, जो भारत की विविधता को प्रतिबिम्बित करते हुए सबको साथ लेकर चले और सामूहिकता के साथ विकास के लिए कार्य करे।

7. हमारे संविधान निर्माता डा. बी. आर. अम्बेडकर जी ने इसी विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा था कि हमें केवल राजनैतिक लोकतंत्र से ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए, बल्कि हमें अपने देश में राजनैतिक के साथ साथ सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना का भी प्रयास करना चाहिए।

8. आज हमारे लोकतंत्र के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है कि ऐसी सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और कानूनी परिस्थितियों का सृजन किया जाए, जो हमारे समाज के प्रत्येक वर्ग को शासन प्रक्रिया में अपनी पूर्ण क्षमता के साथ भाग लेने में समर्थ बनाए। संसद, विधान सभा अथवा पंचायत, सभी लोकतांत्रिक संस्थाओं के अंदर निर्णय प्रक्रिया में जनता की और अधिक सक्रिय भागीदारी किस प्रकार हो, हमारी संस्थाएं जनता की समस्याओं के प्रति किस प्रकार और अधिक संवेदनशील हों, इस पर हमें विचार मंथन करना होगा। लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति लोगों के विश्वास और भरोसे को बनाए रखना हमारा दायित्व है।

9. साथियो, आज CPA की जोन-3 की बैठक भारत के उत्तर पूर्व क्षेत्र के अंदर अरूणाचल प्रदेश विधान सभा में आयोजित की जा रही है जिसमें हम 'उत्तर पूर्वी क्षेत्र के लिए चुनौतियाँ और उनका समाधान' तथा 'आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी संस्कृति के संरक्षण में जनप्रतिनिधियों की भूमिका' विषय पर गहन चर्चा व संवाद करेंगे, विचार मंथन करेंगे।

10. ये दोनों ही विषय लोकतांत्रिक संस्थाओं को जनता से जोड़ने से संबंधित हैं, जनप्रतिनिधियों को प्रभावी बनाने से संबंधित हैं, इसलिए आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

11. साथियो, भारत का उत्तर पूर्वी क्षेत्र विशाल पर्वतों का क्षेत्र है, विशाल नदियों एवं घाटियों का क्षेत्र है। यह अत्यधिक भौगोलिक एवं जनजातीय विविधताओं का भी क्षेत्र है जिसके कारण पूर्वोत्तर क्षेत्र में विकास के लिए कई चुनौतियां आ रही हैं।

**12.** स्वतंत्रता के 75 वर्षों में यहां भी विकास कार्य हुआ है, परंतु विभिन्न कारणों से इन्फ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, कनेक्टिविटी के क्षेत्र में आज भी कई **GAP** हैं जिनको दूर किए जाने की आवश्यकता है।

**13.** राजनीतिक रूप से इस क्षेत्र के राज्यों की स्थिति देश के अन्य राज्यों से अलग रही है। यहां स्थित अधिकतर राज्यों तथा विधान सभाओं का गठन 5 दशक पहले हुआ है। यहां की विशिष्ट राजनीतिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों के कारण इस क्षेत्र में विकास के लिए कठिन चुनौतियां रही हैं।

**14.** परंतु यदि नॉर्थ-ईस्ट क्षेत्र में कई चुनौतियां हैं, तो इसकी कई शक्तियाँ भी हैं जिनके आधार पर इन चुनौतियों का समाधान निकाला जा सकता है। साथ ही, यहां के लोगों की कर्मठता, परिश्रम करने की क्षमता और प्रतिभा के बल पर चुनौतियों को हल किया जा सकता है।

**15.** उत्तर पूर्वी क्षेत्र को ससटेनेबल डेवलपमेंट के लिए अपनी शक्तियों के आधार पर कार्य योजना बनानी होगी। कृषि क्षेत्र में आज पूरे विश्व में जैविक खेती एवं जैविक उत्पादों की डिमांड है। हमें जनता के साथ संवाद के द्वारा इन उत्पादों का प्रोडक्शन बढ़ाना होगा, उनकी मार्केटिंग की व्यवस्था करनी होगी ताकि हमारे उत्पाद पूरी दुनिया में निर्यात किए जाएं।

**16.** इसके अतिरिक्त, नॉर्थ ईस्ट क्षेत्र में विभिन्न जनजातियों के विशिष्ट हस्तशिल्प उत्पाद हैं, जिनकी डिमांड पूरे विश्व में है। इन उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुंचाने के लिए इनके मार्केटिंग की व्यापक कार्य योजना बननी चाहिए।

**17.** संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से भारत के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में एक है। यहां के लोगों के अंदर अतिथि सत्कार की परंपरा है। इसलिए यहां पर्यटन इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के द्वारा पर्यटन को प्रोत्साहन दिए जाने की आवश्यकता है।

**18.** पूर्वोत्तर क्षेत्र में कई प्रदेशों के अंदर 90 प्रतिशत से अधिक साक्षरता हैं। यहां के मानव संसाधन की क्षमता को क्षेत्र के विकास के लिए प्रभावी उपयोग करना हमारी सबसे बड़ी चुनौती है।

**19.** पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास को सुनिश्चित करने में हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं की विशेष भूमिका है। इस क्षेत्र की विशिष्टताओं को देखते हुए हमारे संविधान में स्वायत्त जिला परिषद की व्यवस्था की गई है

जिनके पास स्थानीय स्वशासन के लिए पर्याप्त शक्तियां हैं। ये जनता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हैं, इसलिए ये जनता की जरूरतों के अनुसार, उनकी आशाओं और आकांक्षाओं के अनुसार नीतियों का निर्माण कर सकती हैं ताकि जनता का अधिकतम कल्याण हो और उनकी सामाजिक आर्थिक स्थितियों में सकारात्मक बदलाव आए।

20. लोकतांत्रिक संस्थाओं में जितना अधिक विचार मंथन होगा, उतना ही अधिक जनता के विचारों के अनुसार कार्य योजना बनाते हुए इन चुनौतियों के समाधान का रास्ता निकाल सकते हैं।

21. हमारी संस्कृति हमारी अमूल्य धरोहर है जिनको संरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी है। इस देश के अंदर सैकड़ों वर्षों तक विदेशी शासन रहा, फिर भी वे हमारी संस्कृति, परंपराओं एवं जीवन शैली को समाप्त नहीं कर पाए क्योंकि हमारी संस्कृति अत्यन्त जीवन्त और शक्तिशाली थी।

22. मित्रों, आम धारणा के विपरीत कि संस्कृति और विकास एक दूसरे के सहयोगी नहीं हो सकते, हम विकास और संस्कृति दोनों को साथ साथ लेकर चलें। पूर्वोत्तर भारत के लिए न तो हम विकास से समझौता कर सकते हैं और न ही यहाँ की अद्भुत संस्कृति से।

23. इसलिए, हमें विचार करना है कि हम किस प्रकार पूर्वोत्तर क्षेत्र की जनजातीय संस्कृति को सुरक्षित रखते हुए, यहां के पर्यावरण एवं प्राकृतिक संपदा को सुरक्षित रखते हुए जनभागीदारी और जन सहयोग से इस क्षेत्र के विकास की योजना बनाएं ताकि यहां के लोगों को रोजगार मिले, उनमें समृद्धि आए।

24. पूर्वोत्तर क्षेत्र लंबे समय से उग्रवाद एवं आतंकवाद से प्रभावित रहा है। जितना हम राज्यों के अंदर लोकतांत्रिक प्रणाली अपनाएंगे, जनता को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में शामिल करेंगे, उनकी आकांक्षाओं के अनुसार विकास की कार्य योजना बनाएंगे, उतना ही हम उग्रवाद एवं आतंकवाद को समाप्त कर पाएंगे।

25. आज पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थितियां बदल रही हैं। केन्द्र एवं राज्य सरकारों के सामूहिक प्रयासों से क्षेत्र का सामाजिक आर्थिक विकास किया जा रहा है। शासन में जनता की भागीदारी बढ़ रही है। आज सभी लोग यह मान रहे हैं कि उग्रवाद किसी समस्या का समाधान नहीं है।

**26.** ऐसे में हमें यह मानना होगा कि शासन यदि नीति निर्माण में जनता के विचारों को स्थान दें, उनकी इच्छा के अनुसार कार्य करे, तो उनके अंदर असंतोष नहीं होगा। इसलिए लोकतांत्रिक संस्थाओं का दायित्व है कि वे जनता को केंद्र में रखकर उनकी समस्याओं एवं चुनौतियों पर अधिकतम चर्चा संवाद करें ताकि जनता की लोकतंत्र में आस्था और विश्वास और बढ़े।

**27.** CPA ऐसा ही एक प्लेटफार्म है, जहां हम क्षेत्र के अंदर उपस्थित गंभीर विषयों पर गहन चर्चा संवाद करते हैं और लोकतंत्र और लोकतांत्रिक संस्थाओं को सशक्त बनाने का काम करते हैं। यह सही है कि उत्तर पूर्वी क्षेत्र भौगोलिक एवं जनजातीय दृष्टि से एक विशिष्ट क्षेत्र है। परंतु, यहां कई समानताएं भी हैं। इसलिए यहां के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य योजना का निर्माण इन समानताओं एवं विषमताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।

**28.** माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र भारत के विकास का इंजन है। इसलिए भारत सरकार ने 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के तहत अवसंरचना विकास के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं जिनका क्रियान्वयन तेजी से किया जा रहा है।

**29.** पूर्वोत्तर क्षेत्र भारत का एकमात्र क्षेत्र है जिसके समेकित विकास के लिए भारत सरकार ने विशेष मंत्रालय का गठन किया है। केंद्र सरकार ने अपनी 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के माध्यम से पूर्वोत्तर क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। सभी मंत्रालयों को निर्देश है कि वे अपने बजट का 10 प्रतिशत पूर्वोत्तर क्षेत्र में व्यय करेंगे।

**30.** इनके परिणाम दिखने लगे हैं। पिछले वर्षों में नॉर्थ ईस्ट में पावर, जल आपूर्ति, स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यटन, एयरपोर्ट, रेल, रोड, टेलीकॉम, इंटरनेट कनेक्टिविटी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से काम हो रहा है। जैसे-जैसे यहाँ की कनेक्टिविटी अच्छी होगी, आवागमन के साधन सुलभ होंगे, जिसके परिणामस्वरूप यहां विकास होगा, रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे तथा लोगों में समृद्धि आएगी। मुझे कोई संदेह नहीं कि पूर्वोत्तर भारत एक स्वर्णिम भविष्य की ओर अग्रसर है।

**31.** इन्हीं शब्दों के साथ, मैं आप सभी का एक बार पुनः अभिनंदन करता हूँ। मुझे विश्वास है कि CPA की इस बैठक से नॉर्थ ईस्ट ही नहीं बल्कि पूरे भारत को एक सकारात्मक संदेश जाएगा कि हम किस प्रकार लोकतांत्रिक संस्थाओं का अधिकतम जनकल्याण के लिए प्रयोग कर सकते हैं।

**32. यह कॉन्फ्रेंस हमारी लोकतांत्रिक रीतियों और संसदीय नीतियों के साथ पूर्वोत्तर क्षेत्र में विकास के नए आयाम विकसित करें, मैं यही शुभकामनाएं आप सबको देता हूँ।नमस्कार, बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।**